बारिश का पानी अगर कर लिया स्टोर, फिर पानी की किल्लत No More

■ NBT रिपोर्ट, नई दिल्ली

बीते तीन साल से गर्मियों की शुरुआत मार्च में ही हो जाती है। 2024 में लू का स्पैल काफी गंभीर रहा। इस बार राजधानी समेत उत्तर भारत में सामान्य से अधिक लू चलने की आशंका मौसम विभाग जता चुका है। गर्मी के साथ ही राजधानी में पानी संकट भी रहता है। वहीं, बारिश भी आफत बनकर आती है। एक्सपर्ट के अनुसार बारिश के हिसाब से प्लानिंग की जाए तो पानी की किल्लत से निपटा जा सकता है। साथ ही बारिश से होने वाली तबाही को कम करने के साथ राजधानी में बढ़ती गर्मी को भी थोड़ा कम किया जा सकता है।

वर्ल्ड वॉटर डे स्पेशल

बीते कुछ साल में राजधानी में हर साल 650 से 1100 एमएम के बीच बारिश होती है। एक साल में राजधानी में सामान्य तौर पर 762.3 एमएम बारिश होनी चाहिए। यानी बारिश कम नहीं हो रही, लेकिन कम समय में अधिक बारिश हो रही है। इसे ड्रेनेज सिस्टम हैंडल नहीं कर पाता और बाढ़ जैसे हालात बनते हैं।

क्या है स्थिति: पर्यावरण पर काम कर रहे SAFE (Social Action for Forest & Environment) के विक्रांत तोंगड़ के अनुसार राजधानी की खराब प्लानिंग की वजह से बारिश का करीब 85 प्रतिशत पानी बर्बाद हो जाता है। गर्मी में डिमांड और सप्लाई में 150 से 200 एमजीडी का अंतर रहता है।

हर साल 600 से 1000 MM तक होती है राजधानी में बारिश

- बारिश ज्यादा होने और कमजोर ड्रेनेज सिस्टम की वजह से बाढ़ के हालात बनते हैं
- एक्सपर्ट के अनुसार, अभी नहीं सुधरे तो तीन से चार साल में स्थिति हो सकती है भयावह

राजधानी में कितनी बारिश

2025(अब तक)	10 एमएम
2024	1128.4 एमएम
2023	888.6 एमएम
2022	811.4 एमएम
2021	1526.8 एमएम
2020	1008.6 एमएम
2019	612.7 एमएम
2018	819.1 एमएम
2017	764.9 एमएम
2016	584.3 एमएम
2015	656.1 एमएम

ऐसे बचा सकते हैं बारिश का पानी

झीलों पर काम कर रहे एक्टिविस्ट दिवान सिंह का कहना है कि झीलों को रिवाइव कर बरसाती पानी को सहेजना सबसे कारगर उपाय है। गांव की तुलना में शहरों में झीलों को पुनर्जीवित करना आसान है। पक्का सरफेस होने की वजह से बारिश के पानी को झीलों तक पहुंचाना आसान होता है। राजधानी में अगर बारिश के पानी का 50 प्रतिशत हिस्सा भी सहेज लिया जाए, तो करीब 250 एमजीडी पानी की सप्लाई बढ़ाई जा सकती है। झीलें बढ़ती गर्मी को भी कम करने में सक्षम है। राजधानी में 1000 से अधिक झीलें हैं। उन्हें बचाने पर काम होना चाहिए। झीलों की मदद से बारिश के समय बाढ़ की स्थिति बनने को भी कम किया जा सकता है। रोहिणी द्वारका आदि जगहों पर झीलों को पुनर्जीवित करने का काम काफी आसान भी है। एक्सपर्ट के अनुसार रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम पर अच्छी तरह से काम किया जाए तो इनसे 900 बिलियन लीटर पानी मिल सकता है। अगर सिर्फ छतों पर ही यह काम किया जाए, तो हर मॉनसून के दौरान 27 मिलियन लीटर पानी मिल सकता है।

nwda.gov.in